ऊंच नीच निर्धन धनी, पण्डित संत अजान ।
बसन्त घर में आय जो, तांको दे सन्मान ।८।
आये का आदर करो, आसन दे बैठाय ।
बसन्त मीठे वचन कह, वैर विरोध विहाय ।९।
सर्व दान से श्रेष्ठ है, अतिथि का सन्मान ।
बसन्त तांते सेव कर, जान तिसे भगवान ।१०।
अतिथी के सन्मान सम, आन धर्म नहिं कोय ।
अतिथी पूजक के गृह, बसन्त सब सुख होय ।११
अतिथी के सत्कार से, प्रसन्न हो भगवान ।
बसन्त तांते प्रेम से, दे अतिथी को मान ।१२।
अतिथी तेरे धाम में, खावत अपना भाग ।
बसन्त होगा नाम तव, कहते सन्त सुजाग ।१३।
हरि देता हरि खात है, तू मन मत घबराय ।
बसन्त सब घट है हरी, खाय खिलाय सुख पाय ।१४
परमेश्वर का रूप है, बसन्त यह संसार ।

तांते काहिं न दुःख दे, सबको दे सत्कार ।१५
सन्त विप्र गुरुदेव वृद्ध, जे नहिं पूजत तात ।
बसन्त जीते पाय दुःख, मर कर नरके जात ।१६

गो महात्म्य

गोधन जैसा धन नहीं, देखा मध्य संसार ।
काम धर्म धन मोक्ष का, बसन्त है भंडार ।१।
सब जीवों की मात इक, गो माता पहिचान ।
बसन्त गो बिन जगत में, है रक्षक नहिं आन ।२।
गंगा गीता गायत्री, गो जननी ये माय ।
इन पाञ्चों में उत्तम है, बसन्त माता गाय ।३।
कामधेनु चिन्तामणी, के सम जानो गाय ।
बसन्त सेवे गाय को, सब सुख सम्पत्ति पाय ।४।
गो माता इस जगत का, करती है कल्यान ।
करो रक्षा गो मात की, बसन्त दे धन-प्रान ।५।
दूध दही घी छाछ से, गो पालत सब देश ।

बसन्त ऐसी गाय को रक्षा करो विशेष ।६।
गाय रखे सब देश को, बसन्त रक्षा होय ।
गाय हते हत देश हो, सब सुख सम्पति खोय ।७।
धम अर्थ की दृष्टि से, सब जन हो गोपाल ।
बसन्त देती गाय है, सब को सूख विशाल ।८।
जान पूज गो मात को, रामकृष्ण की सेव ।
बसन्त गो में रहत हैं, ब्रह्मादि सब देव ।९।
गो ब्राह्मण गुरु देवता, इनके पूजे तात ।
बसन्त गृहस्थी मनुष्य के, सर्व पाप मिट जात ।१०।
सब दानों में उत्तम है, देना जीवन दान ।
बसन्त रक्षा सर्ब की, तांते करो सुजान ।११।
गो ब्राह्मण गुरु सन्त की, रक्षा करत है जोय ।
बसन्त तन मन प्रान दे, जात स्वर्ग में सोय ।१२।
बसन्त प्रसन्न होत हरि, जोव दया से खास ।
हरि प्रसन्न नहिं होत है, खाये पुनि पशु मांस ।१३

क्षमा दया उर राख के, किसको ना दुःख देय ।
बसन्त अहिंसा भाव से, सबका हित कर लेय ।१४
हिंसा किसकी ना करो, दुःख ना किस को देह ।
बसन्त सुख दे सर्व को, परम धर्म है एह ।१५।
दीन दुःखी गुगदाम का, बसन्त दुःख कर दूर ।
धैर्य्य दिल में धार के, देहिसूख भरपूर ।१६।
दीन दुःखी मुहताज पर, कबहुं न करिये रोश ।
बसन्त उलटा देहि तुम, तन मन से संतोष ।१७।

"श्रद्धा"

मन के दृढ़ विश्वास को, श्रद्धा कहत सुजान ।
बसन्त हरि परलोक गुरु, शास्त्र में सा आन ।१।
हरि व्यापक है सर्व में, सर्वज्ञ समर्थ दयाल ।
बसन्त देश विदेश में, है सो नित रखपाल ।२।
जीव नित्य तज देह को जाता है परलोक ।
बसन्त भोगे कर्म फल, फिर देखत यह लोक ।३।

सत्गुरु के सत् वचन सुन, श्रद्धा से सत्य मान ।
बसन्त जसे कहत गुरु, तैसे करो सुजान ।४।
सन्त शास्त्र के वचन में, पूर्ण श्रद्धा धार ।
बसन्त वैसे कर्म कर, सुख पाओ दुःख टार ।५।
तीरथ जप तप देव यज्ञ, सत्गुरु सन्तन माहिं ।
जैसी श्रद्धा होय जिह, तैसा फल हो ताहिं ।६।
चार पदारथ मिलन मांहि, कारण श्रद्धा जान ।
श्रद्धा बिन मिलत नहिं, बसन्त सत् पहिचान ।७।
श्रद्धा से तप दान जप, मन वांछित फल देत ।
बिन श्रद्धा कछु मिलत नहिं, तांते होय सचेत ।८।
श्रद्धा से सिद्ध होत है, मन्त्र का अनुष्ठान ।
देव यज्ञ फल देत हैं, वेद करत वख्यान ।९।
श्रद्धा से जो करत है, हरि का सुमरन ध्यान ।
तांको दर्शन देत है, बसन्त श्री भगवान ।१०।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, करत प्रार्थना जोय ।

तांको झटपट सुनत हरि, करत काज सिद्ध सोय।
बसन्त श्रद्धा भाव से, देवी गुन नर पात।
क्षमा दया गम्भीरता, धीर वीर बन जात।१२।
स्वर्ग सुख धन सम्पति, शान्ती यश सन्तोष।
बसन्त श्रद्धावान नर, पावत पद निर्दोष।१३।
श्रद्धा बिन जप दान तप, धर्म कर्म स्नान।
बसन्त फल कछु देत नहिं, सन्त वेद भगवान।१४।
वेद गुरु हरि सन्त में, पूर्ण धर विश्वास।
ज्ञान भक्ति सत् कर्म से, पाओ सुख अविनास।
श्रद्धा बिन भगवान भी, पावत नहिं आराम।
बसन्त श्रद्धावान नर, निर्धंतपा सुख धाम।१६।
अलभ सुलभ ही होत है, अगम सुगम पुनि होय।
बसन्त श्रद्धा से सबी, कार्य पूर्ण जोय।१७।
श्रद्धा से विष अमृत हो, पावक शीतल होय।
कठिन वस्तु हो मोम सम, दुःख नहिं लागत कोय।

सुधन्वा हरि स्मरन किया, श्रद्धा संजम साथ ।
तेल तता शीतल भया, जैसे गंगा पाथ ।१९।
एकलव्य गुरु द्रोण की, मूर्ती रखके पास ।
शस्त्र विद्या सीख ली, पूर्ण धर विश्वास ।२०।
बसन्त पूर्ण भाव से, भजन किया प्रहलाद ।
हरि ने सब दुःख दूर कर, दीना मन अह् लाद ।२१
जगत भावना रूप है, बसन्त कर विश्वास ।
अपनी कर शुद्ध भावना, होवे सब दुःख नाश ।२२

"बसन्त ऋतु"

बसन्त ऋतु सम जगत में, और ऋतु का नाँहि ।
बसन्त रूप बसन्त है, बसन्त दे सब काँहि ।१।
सुर नर गन्धर्व पित्रगण, पशु-पंच्छी बनराय ।
पावत हर्ष बसन्त में, बसन्त सहज सुभाय ।२।
आयी ऋतु बसन्त की, पेड़ भये प्रबीन ।

बसन्त सूके पत्र तज, लावत हरे नवीन ।३।
होय हरे सब पेड़ हीं, फूले फूल अपार ।
सुगन्धी छायी जगत में, बसन्त ऋतु मंझार ।४।
आयी ऋतु बसन्त की, फूले फले सब पेड़ ।
लगे न पत्र करीर को, मंद भाग तिह हेर ।५।
आयी ऋतु बसन्त की, उठ भंवरा अब जाग ।
सब की आशा छोड़कर, चलिये अपने माग ।६।
आयी ऋतु बसन्त की, भंवरा हो हुशियार ।
आलस्य को तज देखिये, बसन्त बाग बहार ।७।
बागीचे में जाय कर, भंवरा लेहि सुगन्ध ।
बसन्त भूल न कीजिये, प्रीति साथ दुर्गन्ध ।८।
आयी ऋतु बसन्त की, सरस भये सब फूल ।
बसन्त भंवरा लेह रस, फूलों पर जा झूल ।९।
बसन्त ले रस फूल का, भंवर भये मस्तान ।
तन मन की सुधि भूल के, देत तहां ही प्रान ।१०

आयी ऋतु बसन्त की, होया सतगुर सांग ।
बसन्त गुरु प्रसाद ते, लागा आतम रङ्ग ।११।
बसन्त ऋतु तन मनुष्य में, हरि गन्ध है भरपूर ।
मन भंवरा उठ सुगन्ध ले, दूःख करो सब दूर ।१२
बसन्त ऋतु मृदु वचन में, उपजत प्रेम सुफूल ।
बसन्त तांमे रहत है, शील सुगन्ध सुख मूल ।१३।
बसन्त ऋतु सतसङ्ग नित, शान्ती देत सुगन्ध ।
बसन्त सब संशय गये, मिटी पाप दुर्गन्ध ।१४।
बसन्त ऋतु सम प्रेम जब, आवत हृदय मंझार ।
बसन्त हरि दुःख द्वन्द तब, आनन्द देत अपार ।।
बसन्त ऋतु है ज्ञानमय, हरत शीत अज्ञान ।
करे निरोगी काय को, आनन्द देत महान ।१६।

विसमरा का अर्थ

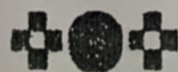
देहि मित्र विश्वास जो, तांको करत विनाश ।

बसन्त भोगत नरक सो, जब लौं इन्दु विभास ।१।
सेतुबंध पुनि सिंधु में, संगम गंगा तीर ।
छूट जात सब पाप पुनि, मित्र द्रोह नहिं वीर ।२।
मेरु सम धन दान दे, कुरुक्षेत्र के माँहि ।
बसन्त छूटत पाप सब, मित्र द्रोह पुनि नाहिं ।३।
राम नाम के जपत ही, छूटत सबहीं पाप ।
बसन्त छूटत एक नहिं, मित्र द्रोह संताप ।४।
देवी घर में रहत तू, बन में कबहुं न जात ।
बन्दर सिंह पुनि मनुष्य की, कैसे जानत बात ।५
देवी द्वज प्रसाद ते, कण्ठ विराजत देव ।
भानुमती के तिलक ज्यों, बसन्त जाना भेव ।६।

सात दिवस

सोम शान्ति स्वरूप तुम, अमृत रस भरपूर ।
कह बसन्त मुझ शान्त दो, कलह क्लेश कर दूर ।१

मंगल मंगल रूप तुम, मंगल कर सब देश ।
बसन्त तन तन्दुरुस्त रहे, मन में शांति विशेष ।२।
बुद्ध तुम बिद्ध बल ज्ञान निधि, आनन्द के हो धाम ।
बसन्त आनन्द बल बुद्धि, देह मुझे आराम ।३।
गुरु तुम हो सब देव गुरु, ज्ञान गुणन आगार ।
बसन्त आतम ज्ञान दे, देवी गुणन भंडार ।४।
शुक्र शुक्र स्वरूप तुम, हित करना निर्दोष ।
बसन्त का नित हित करो, देहि शील सन्तोष ।५
शनि शक्ति स्वरूप तुम, सबसे हो बलवान ।
जन बसन्त पर कर दया, कार्य करो महान ।६।
रवि राम सुख धाम हो, सदा स्वयम् प्रकाश ।
बसन्त अविद्या तिमर हर, दे मुझ ज्ञान उजास ।७
सात दिवस का प्रतिदिन, जो जन कर हैं जाप ।
बसन्त तांको देत नहिं, सात ग्रह संताप ।८।



यात्रा के मुहूर्त

शनी सोम इक नौम को, पूर्व चलिये नाहिं ।
तीज एकादशी जाय नहिं, अग्नि कोण के माहिं ।१
पंचम त्रयोदशी वार गुरु, दक्षिण देश मत जाय ।
चोथ एकादशी को नहीं नैऋत में धर पाय ।२।
चतुर्दशी छठ शुक्र रवि, जाय न पश्चिम देश ।
सप्तम पूर्ण मास नहिं, बाएं कर प्रवेश ।३।
दशमी द्वितीया भौम बुद्ध, उत्तर न जाए कोय ।
अष्टमी उमावस्य को, नहिं ईशा नहिं जोय ।४।
मेष सिंह धनराशि में, पूर्व दिश विधु होय ।
वृष कन्या पुनि मकर में, दक्षिण देश चंद जोय ।५
मिथुन तुला पुनि कुम्भ में, पश्चिम को शशि जान ।
कर्क वृश्चिक मीन में, उत्तर इन्दु पहिचान ।६।
दिशा शूल को वाम दिश, योगिन पीछे होय ।
सन्मुख चंदा कर चले, बसन्त सब सुख जोय ।७।

शुक्र शनी में सात पद, अन दिन ग्यारहं पाद ।
वीर वार आधा पटक, समन किये अह्लाद ।८

द्रव्य विचार

जा जा वस्तू जगत में, सा सा धन से होय ।
बसन्त तांते यत्न से, संग्रह करत धन लोय ।१।
धन से महल मकान हो, धन से रथ हस्वार ।
धन से खान रूपान हो, बसन्त तन शृङ्गार ।२।
धन से अतिथी सेव हो, धन से होय पुण्य दान ।
बसन्त पूजन यजन हो, धन से तीर्थ स्नान ।३
मूर्ख पण्डित होय पुनि, निर्गुण हो गुणवान ।
दोषी नर निर्दोष हो, धन से बसन्त बखान ।४।
नीच मनुष्य भी ऊंच हो, बसन्त धन प्रभाव ।
शत्रु मित्र बनि जात है, धन से सहज स्वभाव ।५।
धन के बल से निबल भी, होत मनुष्य बलवान ।

द्रव्य हीन बलवान भी, बसन्त निबल पहिचान ।६
धन लखि आदुर देत सब, बिन धन पूछत नाहिं ।
बसन्त जो धन देत है, मानत हैं सब ताहिं ।७।
बसन्त धन से चलत है, इस जग का व्यवहार ।
धन बिन जीवन मनुष्य का बिल्कुल है बेकार ।८
झूठ कपट बल छल ठगी, दम्भ द्रोह कर लोग ।
बसन्त द्रव्य कमाय के, भोगत बहुते भोग ।९।
बसन्त धन हित धर्म तज, अधर्म मनुष्य कमात ।
हिंसा चोरी वचन भंग, विश्वास करते घात ।१०
धन कारण नर जात है, देश छोड़ परदेश ।
नीच मनुष्य की सेव कर, बसन्त सहत क्लेश ।११
भाग बिना धन मिलत नहिं, रे नर कर विश्वास ।
चाहे जा पाताल में, चाहे भूमि अकास ।१२।
माया छाया एक सी, स्थिर रहती नाहिं ।
माया पीछे मूण्ढ तू, बसन्त दौड़त काहिं ।१३

दौलत को दो लात हैं, मारत आते जात ।
आते शिर ऊंचा करे, जाते कमर निपात ।१४।
पाप करे इकठी करत, माया को जन जोय ।
बसन्त वो फिर पाप कर, जात नरक में सोय ।१५
बसन्त धन से पुण्य करो, पाप करो तुम नाहि ।
धर्मी स्वर्ग जात हैं, पापी नरकों मांहि ।१६।
बसन्त माया त्रिगुणी, सत से मोहे देव ।
रज से मानुष्य तमहुं ते, पशु पंछी लख लेव ।१७।
बसन्त माया सापिनी आप वंश को खात ।
भाग जात हरि शरन जो, बसन्त सो बच जात ।१८
तीन गुणों से मोहिनी, मोहे सब संसार ।
बसन्त सो बच जात जो, स्मरत सिरजणहार ।१६
हाय हाय मति हाय कर, माया कारण मीत ।
बसन्त माया देत दुःख, तन मन माहीं नीत ।२०।
बसन्त कहु किस पाइया, माया में सुख शान्ति ।

रो रो कर सबहीं गये, खो कर तन मन क्रान्ति २१

माया की ममता तजे, मोहन से कर प्रीति ।
बसन्त तन मन हो सुखी, होय न कछुपि प्रतीति ।२२

बसन्त माया आय जो, खाओ और खिलाय ।
बहुती संग्रह मतकारो, माया है दुःख दाय ।२३।

क्षमा शान्ती नम्रता, धर्म दया सन्तोष ।
माया आते रहत नहिं, धीरज जीवन मोष ।२४।

आशा तृष्णा वासना, चिन्ता द्वेष रु राग ।
माया आते बढ़त हैं, तांते करिये त्याग ।२५।

आंतम धन इकठा करो, शान्ती सुख के हेत ।
बसन्त माया कर कठो, पाय न योनि प्रेत ।२६।

नारी निन्दा

पतिव्रता व्यभचारिणी, नारी द्वय जग मांहि ।
पतिव्रता पति को भजे, और भजत हैं नाहिं ।१।

पति को तज पर पुरुष से, प्रीत करत जा नारि ।
बसन्त वहं दुःख भोग कर, देखत नरक द्वार ।२।
देह प्राण का मोह तज, होत सती जा नारि ।
बसन्त जाय स्वर्ग महिं, भोगत भोग अपार ।३।
साथ पति के जरत नहिं, सत्त में रहती जोय ।
ज्ञान पाय हरि को भजे, मुक्ति पावत सोय ।४।
भर्ता भार्या परस्पर, रहत प्रसन्न जंह नीत ।
बसन्त तंह सुख सम्पदा, रहत श्री हरि प्रीत ।५।
पति की आज्ञा में चले, पति का राखे मान ।
बसन्त संजम में रहे, पतिव्रता सा जान ।६।
पति को जाने प्राण सम, सेव करे दिन रात ।
बसन्त सुख दुख सब सहे, करे न अन से बात ।७।
मात बहिन जंह पुत्र वधु, सुता अकेली होय ।
बसन्त तहं ना बैठिए, प्रबल इन्द्रिय को जोय ।८।
नारि पिशाची रैन दिन, बसन्त नर को खात ।

तो भी समुझत मूण्ड नहिं, उलटा हर्ष मनात ।९।
बसन्त कान्ता मनुष्य की, हरती तन मन क्रान्त ।
मन महिं डाले कल्पना, शान्ति करत है शान्त १०
सुन्दर युवति पुरुष के, मन को झट हर लेत ।
तन मन धन का खोस बल, कांयर ही कर देत ।११
आंख मिलाकर आंख से, नारि करत आधीन ।
शूरवीर नर सुर असुर, होत दीन ते दीन ।१२।
हाव भाव रस रास कर, हस हस के रीझाय ।
नारि करत वश नरन को, बसन्त सहज सुभाय १३
अंग दिखाकर अंगना, उत्पति करन अनंग ।
भूत भूतनी होय के, भोगत भोग निसंग ।१४।
बसन्त संगति नारि की, करत पुरुष को नाश ।
बेमुख कर भगवन्त सें, देत नरक महिंवास ।१५
नारि कुरुप कुबोलिनी, बसन्त है दुःख रूप ।
इनसे भी दुःख देत बहु, युवति सुन्दर स्वरूप ।१६

मोक्ष धर्म धन देह की, दुश्मन नारी जान ।
मोह फांस में बांध कर, भेजत नरक निदान ।१७
बसन्त काटे सापिनी, एक जन्म ही जात ।
नारि नागनी काट कर, जन्म जन्म भटकात ।१८

अष्टांग योग

भोगे भोग अनेक तुम, कबहुं न कीना जोग ।
बसन्त तांते पाइया, तन मन के सब रोग ।१।
भोग रोग को त्याग के, बसन्त कोजे योग ।
एकाग्र शुद्ध मन करो, आतम से संजोग ।२।
योग बिना नहिं ज्ञान हो, ज्ञान बिना नहिं योग ।
बसन्त तांते योग कर, तजे जगत के भोग ।३।
चित्त को एकाग्र करे, आतम में मन जोड़ ।
बसन्त ऐसा योग कर, जग के बन्धन तोड़ ।४।
चित्त एकाग्र करन हित, साध योग अष्टांग ।

बसन्त गुरु से सीख के, वश कर ये मन नाग ।५।
इक यम दूजा नियम लख, तीजा आसन जान ।
चोथा प्राणायाम कर, प्रत्याहार पहिचान ।६।
छठवीं कर तू धारणा, सतवां ध्यान लगाय ।
सविकल्प समाधि आठ ये, साधन योग कमाय ।७
यम के लक्षण श्रवण कर, धारो हृदय माहिं ।
मन इन्द्रियन को दमन कर, जग में भटको नाहिं ।८
अहिंसा सत्य अस्तेय पुनि, ब्रह्मचर्य ये चार ।
पंचवा अपरिग्रह है, यम लक्षण निर्धार ।९।
बसन्त तन वन वचन से, किसको ना दुख देह ।
उल्टा सुख दे सर्व को, अहिंसा लक्षण एह ।१०।
सब साधन का मूल है, अहिंसा साधन जोय ।
बसन्त अहिंसा सिद्ध किये, सब साधन सिद्ध होय ।
बसन्त सत्य दो भान्ति का, सत्य वचन नित बोल ।
सत्य ब्रह्म को जान तुम, पांचों पड़दा खोल ।१२

सत्य का करो विचार तुम, सत्य का करो उच्चार ।
सत्य का कर व्यवहार पुनि, सत्य का करो अहार ।
अस्तेय चोरी ना करो, ऋषि मुनि कहते एह ।
मालिक के आज्ञा बिना, पर की वस्तु न लेह १४।
बचना मैथुन आठ से, ब्रह्मचर्य कह ताहिं ।
बसन्त मन वच काय से, परतिय भोगे नाहिं ।१५
तन को आवश्यकता बिना, संग्रह करे न भोग।
ताहि अपरिग्रह कहहिं, बसन्त मुनिवर लोग ।१६
पाञ्च लक्षण यम के कहे, योग शास्त्र अनुसार ।
अब लक्षण सुन नियम के, वे सब मन में धार।१७
शौच तोष तन तीन ये, चतुर्थ है स्वाध्याय ।
ईश्वर प्रणिधान कर, पांचों नियम कमाय।१८
जल माटी से धोवना, तन की शुद्धता जान ।
तजिना विषय विकार को, मन की शौच पछान ।
जो हरि तेरे कर्म का, तुझको ही फल देइ ।

राजी रहना ताहिं पर, तोष लक्षण है एह।२०।
धर्म कर्म हरि भजन में, द्वन्द दूःख जो आय।
बसन्त तिनके सहन को, तप कहते मुनिराय।२१
श्रवण मनन वेदान्त का, चिंतन करना जोय।
स्वाध्याय तांको कहत, हरिस्मरण वा होय।२२
यज्ञ दान तप आदि जे, कर्म करो नित मीत।
ईश्वर अर्पण सब करो, मन ममता को जीत।२३
दश लक्षण यम नियम के, धारत हृदय जोय।
सो अधिकारी योग का, बसन्त निश्चय होय।२४
बसन्त जितनी योनि हैं, उतने आसन जान।
तासें चौरासी किये, आसन शिव भगवान।२५
बसन्त तांमे मुख्य दो, पद्म सिद्धासन जान।
इनके साधे होय सिद्ध, योग समाधि सुजान।२६
औरहिं आसन देह के, रोग करत सब नाश।
बसन्त गुरु से सीख के, कर आसन अभ्यास।२७।

निश्चल सीधा बैठके, भद्रा मुद्रा बांध।
बसन्त प्राणायाम कर, मन की छोड़ उपाध।२८
बसन्त गुरु से सीख के, कीजे प्राणायाम।
पूरक कुम्भक रेचको, करलो शुद्ध तमाम।२६।
पद्म सिद्धासन बांध के, बसन्त थिर कर देह।
बांये पुट से श्वास को खींच हृदय भर लेह।३०
भरने को पूरक कहे, बसन्त मुनिवर राव।
ताहिं प्राण को थिर करन, कुम्भक है सत् भाव।
दहिने पुट से प्राण वह, धीरे धीरे त्याग।
तांको रेचक कहत है, बसन्त सन्त सुजाग।३२
त्याग करो जिस द्वार से, उससे हो फिर लेह।
कुम्भक कर रेचक करो, प्राणायाम है एह।३३।
रोग घटे आयू बढ़े, ब्रह्मचर्य थिर होय।
बसन्त पावन इन्द्रिय हो, प्राणायाम से जोय।३४
प्राणायाम से तेज हो, जठराग्नि दिन रैन।

चंचल मन निश्चल करे, योगी पावत चैन ।३५।
मूलबन्ध उडियान बन्ध, जालन्धर कर बन्ध ।
तीनों प्राणायाम कर, बसन्त हर दुःख द्वन्द ।३६
बसन्त गुरु के मन्त्र से, कीजे प्राणायाम ।
श्रुति नृति थिर वृत्ति कर, पाय अन्तर आराम ।
श्रुति शब्द पुनि श्वास ये, जब तक एक न होय ।
बसन्त तब तक नियम से, करत रहो तुम सोय ।
बसन्त सोऽहं मंत्र नित, चलत श्वास के माहिं ।
केवल श्रुति मिलाय के, निशदिन सुमरो ताहिं ।
प्राण मूल सें उठ के, जावत दसवें द्वार ।
तांसे मन को मेल के, स्मरण कर हर बार ।४०।
स्वल्प प्राणायाम का, बसन्त कोन बयान ।
अब लक्षण प्रत्याहार का, सुनो सजन दे कान ।
पांच विषय का इन्द्रिय से, संबंध है दिन रात ।
बसन्त तांते भोगतो, इन्द्रिय विषय को तात ।४२

बसन्त इससे इन्द्रिय मन, तजकर स्मरण ध्यान।
वेग जात हैं विषय में, चंचल होय महान ।४३।
जब मन जावहिं विषय में, भजन ध्यान को छोड़ ।
दोष दिखाए विषय में, मन आतम में जोड़ ।४४।
पांच विषय से रोकना, मन का है प्रत्याहार ।
सावधान हो वेग कर, सब विघ्नों को वार ।४५।
बसन्त चित्त को ध्येय में, धरण धारणा ध्यान ।
ध्येय धारणा का धनी, तांको तुम पहिचान ।४६
पांच तत्त्व गुरुदेव पुनि, त्रिकुटी आदि अंग ।
निर्गुण सगुण ब्रह्म है, करलो इक से संग ।४७।
जिसको करिये धारणा, धरो तिसीका ध्यान।
बसन्त यकटिक ध्यान हो, वृत्ति न आवे आन ।४८
बसन्त जैसे चान्द का, करता ध्यान चकोर ।
ध्यान धरो तिम ध्येय में, देख न काहूं ओर ।४९
ध्येय ध्यान ध्याता रहे, और रहे ना कोय ।

बसन्त सगुण समाधि सा, भाखत मुनिवर लोय।५०

मन के एकाग्र किये, रिद्धि सिद्धि बहुती आय।
बसन्त तांको छोड़ के, निगुण समाधि लगाय।५१

ध्याता लय हो ध्यान में, ध्यान ध्येय में लीन।
ध्येय रहे अन ना रहे, निर्गुण समाधि चीन।५२।

आठ अंग ये योग के, कछुक कहे उर धार।
ध्यान धारणा समाधि का, करहूं फिर विस्तार।

मूलबन्ध कर मूल में, दृढ़ सिद्धासन बाँध।
गणपति का धर ध्यान तहं, सर्व विघ्न हो बाध।

बसन्त निशदिन ध्यान धर, नाभ कमल के माँहि।
वहां रहत भगवान हरि, दर्शन कीजे ताँहि।५५।

बसन्त हृदय वास कर, शंकर खेलत खेल।
नाद अनाहत बाजता, तासें मन को मेल।५६।

बसन्त हृदय कमल ज्यों, नीचे मुख है जास।
विकसत जाग्रत स्वप्न में, सुषपति निस्पन्द तास।

बुद्धि का साक्षी जो है, आनन्द रूप अपार ।
बसन्त तांका ध्यान धर, हृदय कमल मंझार ।।
कण्ठ विराजत शारदा, तांका धरिये ध्यान ।
बसन्त वाणी मधुर हो, पुनि कविता का ज्ञान ।।
नासाग्र में ध्यान धर, देखो तत्त्व सु पांच ।
बसन्त भविष्यत ज्ञान हो, योगी कहते सांच ।
गंगा यमुना सरस्वती, प्रयाग त्रिभणा माहिं ।
बसन्त जो तंह ध्यान धर, पाप छूट सब जाहिं । ६१
नृति नैन को उलट कर, धर सतगुरु का ध्यान ।
होय मगन गुरुदेव में, ना देखो कछु आन । ६२ ।
त्रिकुटी में है शंख धुनि, पुनि दीपक प्रकाश ।
बसन्त तंह नित कीजिये, ओऽम् का अभ्यास । ६३
जैसे करत अभ्यास तिम, बढ़ती ज्योति महान ।
बसन्त नक्षत्र दामनी, दीसत शशि पुनि भान ।।
सहस्त्र दल में दामनी, प्रातः सूर प्रभास ।

सुन बादर सी गरजना, बसन्त तंह कर वास ।६५
भंवर गुफा में बीन सी, सुन धुनि मन कर शांति ।
बसन्त तामें देख तुम, पूर्ण सूर्य क्रान्ति ।६६।
रिणु झिणु हो ऋणू कार में बाजत नाद अनन्त।
बसन्त सुनकर प्रेम से, होत मगन मन सन्त ।६७
शून्य सकड़ में शून्य है, होय तहां मन शांति ।
बसन्त आनन्द आवहिं, बिन फुरने बिन भ्रांति।
बसन्त द्वारे दसम में, राजत आतम देव ।
सोऽहं से मन मेल के, पाओ तिसका भेव ।६९
बसन्त सत्य स्थान में, सत्य ब्रह्म का वास ।
भासहिं तहां न रैन दिन, चंद्र सूर्य प्रकाश ।७०
बसन्त चेतन देव में, श्रुति किया प्रवेश ।
पूर्ण आनन्द पाइया, भूले देश अशेश ।७१।
देश जहां तंह काल है, काल जहां तंह देश ।
बसन्त नहिं चिदरूप में, देश काल का लेश ।७२

जांमे रवि शशि पांच तत, नांहि जगत का खेल।
बसन्त तिस चिन्मात्र में, भया श्रुति का मेल।७३

श्रुती चेतन हो गयी, तज कर अपना भाव।
भेद भरम सब मिट गया, बसन्त सहज स्वभाव।

बंध मोक्ष जांमे नहीं, बसन्त तंह मम वास।
दूःख द्वन्द व्यापे नहीं, नहिं यमराज त्रास।७५

बसन्त श्रुति रु शब्द का, सतगुरु कीना मेल।
सोऽहं जप सोऽहं भया, देखा अद्‌भुत खेल।७६

सतगुरु के पद कमल में, करहूं कोटि प्रणाम।
जिह प्रसादे पाइया, बसन्त आनन्द धाम।७७

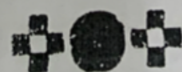
देह निन्दा

घोर नरक है देह यह, रोग शोक की खान।
बसन्त इनका मोह तज, अपना आप पछान।१

देह मलिन को रैन दिन, कांहि संवारत मोत

बसन्त यह छवि कुसम जिम,इक रस रहत न नीत।
देह छवि को देख तू, मोह करत है कांहि।
बसन्त यह छवि नाहिं तब, निश्चय कर मन माहिं।
अस्थि मांस मल मेद पर, चढ़ा सुन्दर है चाम।
तांको अपना रूप लखि, भूल गया छवि धाम।४
जैसे रवि प्रकाश से, प्रकाशत हैं नैन।
आतम छवि से बसन्त तिम,तन शोभत दिन रैन।५
आतम छवि बिन देह छवि,मलिन होत खिन माहिं।
जार लेत शमशान महिं, राखत कोऊ नाहिं।६।
चेतन होते देह से, सब जन करते प्यार।
बिन चेतन सब भूत लख, करत सबी तिरस्कार।
बसन्त अती मलीन है, इस तन के सब द्वार।
रैन दिवस तुम देखते, तो भी करते प्यार।८।
देह मलिन तू है नहीं, तू है चेतन देव।
बसन्त तांको जान के, त्यागो तन अहमेव।९।

अहंता ममता देह की, बसन्त तत्क्षिण त्याग ।
देह द्रष्टा जो आतमा, तांसे कर अनुराग ।१०।
गर्भ जन्म बालक युवा, जरा मरण दुःख कूप ।
बसन्त तन में सुख नहीं, आतम है सुख रूप।११।
बालापन में मूंढता, यौवन मांहि विकार ।
वृद्धापन में ताप बहु, रहते देह मंझार ।१२।
बसन्त कफ पित वात से, देह बनी स्थूल ।
तांमे होत बहुत दुःख, जे यह होत प्रतिकूल ।
आशा तृष्णा चिन्त पुनि, काम क्रोध अहंकार ।
हर्ष शोक सब द्वन्द का, सूक्ष्म तन आगार।१४।
सर्व दुःखों का बीज है, कारण देह अज्ञान ।
बसन्त सबका भाव तज, आतम को पहिचान ।१५
तीन देह दुःख रूप हैं, तू है सुख स्वरूप ।
बसन्त ऐसा जानके, पाओ सूख अनूप ।१६।



यथार्थ ज्ञान आतम विचार १

मूर्ख देखत देह को, अपना वपु तिह मान ।
बसन्त चेतन ज्योति को, जानत नाहिं अजान ।१।
जिससे भासत देह यह, तीन काल के माहिं ।
बसन्त आतम तत्व सो, क्यों कहते हो नाहिं ।२
काष्ठ से भिन्न अग्नि जिम, बसन्त तन से प्रान ।
तैसे आतम देह से, निश्चय भिन्न पहिचान ।३।
मध्य काल में देह यह, आतम हैं सब काल ।
नाश होत है देह यह, आतम पुरुष अकाल ।४।
पांच भूत की देह यह, बसन्त है स्थूल ।
नित्य मुक्त शुद्ध एक रस, तू चेतन सुख मूल ।५।
जन्म मरण है धर्म तन, आतम के पुनि नाहिं ।
अज अविनाशी आतमा, कहा वेद के माहिं ।६।
चार वर्ण आश्रम पुनि, इन्द्रियों के दश द्वार ।
नाम रूप है देह के, आतम असंग विचार ।७।

बसन्त स्थूल देह यह, जड़ परिणामी जान।
अखण्ड चेतन एक रस, आतम को पहिचान ।८।
सत्रहं तत्त्व की देह यह, सूक्ष्म सो तू नाहिं।
सुख दुःख आदि द्वन्द सब, बसन्त है इस माहिं ।९।
सर्व द्वन्दों से बसन्त भिन्न, आतम इक रस जान।
कर्त्ता भोक्ता लिङ्ग तन, आतम अक्रिय मान ।१०।
ज्ञान कर्म दश इन्द्रिय पुनि, बसन्त पांच प्रान।
मन बुद्धि सत्रहं तत्व ये, सूक्ष्म देह पहिचान ।११।
कारण देह अज्ञान मय, तू है ज्ञान स्वरूप।
बसन्त द्रष्टा कोष का, आतम अगम अनूप ।१२।
लाल रंग जिम फूल का, भासत स्फटिक माहिं।
तीन देह के धर्म तिम, भासत आतम माहिं ।१३।
अन्नमय, मनमय, प्राणमय, विज्ञान आनन्द कोष।
बसन्त इनसे असंग तू, साक्षी है निर्दोष ।१४।
अन्नमय स्थूल देह है, सूक्ष्म मन बुद्धि प्राण।

आनन्द कारण देह है, बसन्त मिथ्या मान ।१५।
देह कोष जड़ रूप है, तू चेतन अधिष्ठान ।
बसन्त ऐसे ज्ञान के, त्यागो तन अभिमान ।१६
जिसके होते होत सब, जिस भासे सब भास ।
बसन्त तिसको देख तू, त्यागे तन अध्यास ।१७।
कल्पित तन मन इंद्रिय पुनि, चिदाभास बुद्धि जान
इन सबका आधार जो, साक्षी सो पहिचान ।१८
बसन्त आतम एक है, आनन्द रूप अपार ।
मिथ्या जड़ दुःख रूप है, नाना तन आकार ।१९।
बसन्त जो जन देह को, मानत अपना आप ।
सो भोगत इस ज्ञान से, तन के सब संताप ।२०।
जाग्रत स्वप्न सुषोपति, तीन अवस्था जान ।
बसन्त द्रष्टा तीन का, साक्षी सो पहिचान ।२१।
जाग्रत में स्वप्न नहीं, स्वप्ने सुषुपति नांहि ।
सुषोपति आतम में नहीं, आतम है सब मांहि ।२२
जाग्रत में स्वपन नहीं, स्वपने जाग्रत नांहि ।

बसन्त तांते झूठ द्वै, कर विवेक मन माँहि ।२३।

जाग्रत स्वपन सुषुप्त का, प्रकाशक है जोय ।
बसन्त जानत जो तिसे, मुक्ति पावत सोय ।२४।

देह इन्द्रिय मन प्राण बुद्धि, ये पांचों तू नाँहि ।
बसन्त तू इन सर्व का, साक्षी चेतन आँहि ।२५।

तू असंग शुद्ध, व्योम सम, नाँहि किसीसे सङ्ग ।
बसन्त ऐसा जान के, संग भ्रान्ति कर भङ्ग ।२६।

बसन्त सब में एक रस, चेतन है भरपूर ।
ज्ञानी प्रत्यक्ष देखते, मूर्ख मानत दूर ।२७।

प्रत्यक्ष आतम ज्योति है, लखै न ताँहि अजान ।
बसन्त सब घट एक रस, जानत सन्त सुजान ।२८।

बसन्त रवि प्रकाश से, जैसे देखत नैन ।
तैसे चेतन ज्योति से, देह चलत दिन रैन ।२९।

आतम शक्ति से चलत है, बसन्त प्रान अपान ।
मन बुद्धि इन्द्रिय करत है, निज निज कार्य महान ।
मन बुद्धि इन्द्रिय की विषय, जा जा वस्तू होय ।

बसन्त तांको कहत है, अमुक वस्तु सब कोय ।३१।
बसन्त मन बुद्धि इन्द्रिय की, विषय आतमा नाहिं ।
तातें कोय न कह सके, वेद नेत कह जाहिं ।३२।
बुद्धि जानत जिह वस्तु को, सा पुनि आतम नाहिं ।
बसन्त जो बुद्धि को लखे, आतम कहिये ताहिं ।३३
जिसकी सत्ता पाय मन, मनन करत दिन रात ।
बसन्त सो है आतमा, वेद कहत अस बात ।३४।
जांको सत्ता पाय कर, बसन्त कर कर काम ।
पाद प्रान पुनि चलत हैं, सो है आतम राम ।३५।
बसन्त जां बिन नैन नहिं, देखत नाना रूप ।
जिस सत्ता से देखते, सो आतम स्वरूप ।३६।
श्रवण सुनत है शब्द को, जिसकी सत्ता पाय ।
बसन्त रसना लेत रस, सो आतम सुखदाय ।३७
बसन्त नव को गिनत नर, दसवां गिनत न आप ।
बार बार पछुताय के, मूण्ढ सहे संताप ।३८।

और सर्व को जानता, अपने को नहिं जान ।
बसन्त ऐसा मूंढ मति, पावत दूःख महान ।३९।
देह नहीं मैं आतम हूं, निश्चय जानत जोय ।
बसन्त जग के द्वन्द दुःख, ताहिं न व्यापत कोय ।४०
असंग अमर मैं आतमा, जानत जो मन माहिं ।
बसन्त ऐसा पुण्य कहं, भूत भविष्यत नाहिं ।४१।
बसन्त विस्मय होत नर, पाय निजातम भेव ।
देख देख पुनि हंसत है, सब में सोई देव ।४२।
जांका रूप न रंग कछु, है निर्गुण निर्वान ।
बसन्त तांको जान जन, होवत विस्मयवान ।४३
गूंगा हंसत न कहत जिम, सुन्दर देख स्वरूप ।
बसन्त ज्ञानी हंसत तिम, कह न सकत निज रूप ।
जो देखत है ताहिं में कहने का बल नाहिं ।
बसन्त गम नहीं शब्द की, रसन कहे किम ताहिं ।



निर्गुण सगुण ब्रह्म विचार–२

सत्चित् आनन्द ब्रह्म है, अखण्ड अद्वय अपार।
अगम अगोचर एक रस, निर्गुण निरहंकार।१।
परम पुरुष परमात्मा, अनन्त मंगल धाम।
माया काया से परे, बसन्त है अल काम।२।
बसन्त जिसके अंश में, है जड़ त्रिगुण माय।
उनकी सत्ता पाय के, रचती है बहु काय।३।
जिसकी सत्ता पाय के, भासत सत् संसार।
बसन्त सो परमात्मा, है जग का आधार।४।
बसन्त जिसकी ज्योति से, प्रकाशत शशि सूर।
दामनी नक्षत्र अग्नि पुनि, चेतन सो भरपूर।५।
जिस आनन्द से जगत यह, भासत आनन्द रूप।
बसन्त सोई ब्रह्म है, पूरण पुरुष अनूप।६।
समर्थ सर्वज्ञ एक विभु, मायिक ईश्वर होय।
उत्पति स्थित लय करे, जग कारण है सोय।७।

लक्ष्मी नारायण उभय, व्यापक हैं जग माहिं।
उपज निपज लक्ष्मी करे, हरि प्रकाशे ताहिं।८।
अन्तरयामी असंग पुनि, सबका जाननहार।
ताहिं न जानत बसन्त को, मिथ्या जड़ संसार।६।
आवागमन सब जीव का, उत्पतो प्रलय जोय।
बसन्त विद्या अविद्या को, जानत है हरि सोय।
बसन्त प्रेरक सर्व का, सर्वस्व शक्ती मान।
करता हरता जगत का, भरता है भगवान।११।
सब जीवों को एक ही, देत कर्म फल जोय।
सो समर्थ सर्वज्ञ हरि, सब में व्यापक होय।१२।
कर्मों का फल देत हरि, और न कोऊ देत।
बसन्त हरि के हुकम में, चलत विश्व का खेत।१३
इन्द्र पवन रवि अग्नि शशि, सिन्धु काल यमराज।
ईश्वर आज्ञा मान के, बसन्त करत सब काज।१४
षट् भग सम्पन्न जो सदा, बसन्त सो भगवान।

सगुण ब्रह्म साकार है, विष्णु शंकर जान ।१५।
बसन्त भक्तन हेत हरि, आवत है जग माँहि ।
राम कृष्ण का रूप धर, देत दरश सब काँहि ।
आंख मूंद नर कहत है, ना है नभ में भान ।
बसन्त मूर्ख कहत तिम, जग में नहिं भगवान ।१७
बसन्त नभ सम सर्व में, इक रस व्यापक जोय ।
सर्व रूप सब ते परे, अद्वय ब्रह्म है सोय ।१८।
कारण कार्य जगत का, अधिष्ठान चिद रूप ।
बसन्त तांको वेद सब, कहत ब्रह्म स्वरूप ।१९।

जीव ब्रह्म एकत्व-३

सत्चित् आनन्द आतमा, बसन्त अद्वय अपार ।
आतम ब्रह्म स्वरूप है, सन्त कहत निर्धार ।१।
बसन्त आतम सर्व में, व्यापक है सम एक ।
वेद कहहिं नाना नहीं, करके देख विवेक ।२।

जो तोमें सो सर्व में, प्रत्यक्ष चेतन आहिं ।
बसन्त तांको जानके, लीन होय तिय माहिं ।३।
तोमें, मोमें सर्व में, विभु चेतन है एक ।
बसन्त ऐसे जान के, तज तू वृत्ति अनेक ।४।
बसन्त जैसे अग्नि का, है काष्ठों में वास ।
तैसे चेतन ज्योति का, सब में है प्रकाश ।५।
बसन्त जैसे सर्व को, देत व्योम अवकाश ।
तैसे आतम आप में, देत जगत को वास ।६।
बसन्त आतम सर्व में, सब हैं आतम माहिं ।
सब जग आतम रूप है, तां बिन दूसर नाहिं ।७।
सच्चित् आनन्द आतमा, सोय ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त यामें भेद नहिं, है अद्वैत अनूप ।८।
दुर्वासा दत्त राम शिव, वशिष्ठ आदि मुनि आन ।
सब कहते तू जीव नहिं, तू है ब्रह्म महान ।९।
आतम और परमात्मा, एक रूप कर जान ।

बसन्त निश्चय दृढ़ कर, भेद न जिय में आन।१०।
जो परोक्ष परमात्मा, व्यापक है सब माँहि।
सो है तेरा आतमा, बसन्त भूलो नाँहि।११।
बसन्त बिम्ब प्रतिबिम्ब में, भेद न जैसे आँहि।
तैसे जीव अरू ब्रह्म में, भेद भाव कछु नाँहि।१२।
जीव ब्रह्म को एककर, जानत निश्चय जोय।
बसन्त मैं सत् कहत हूं, मुक्ती पावत सोय।१३।
जीव ब्रह्म में मनुष्य जो, जानत स्वल्प भेद।
बसन्त सो जन पावता, जहं तहं भय दुःख खेद।१४
देह नहीं मैं ब्रह्म हूं, यह समझत जो नीत।
बसन्त सुख से रहत सो, त्याग संशय विपरीत।१५
तुम हम हम तुम एक हैं, बसन्त कहत सुन तात।
भेद भरम सब मिट गया, रही न दूजी बात।१६
जग मिथ्या सत् ब्रह्म हैं, जीव ब्रह्म इक जान।
बसन्त ऐसा जानके, पावो शान्ति महान।१७।

सत्चित् आनन्द ब्रह्म जो, सो है मेरा रूप ।
बसन्त ऐसे जपत जो, न पड़त भव कूप ।१८।

जगत् मिथ्या ब्रह्म रूप है-४

जग का अती अभाव है, पूर्ण ब्रह्म के मांहि ।
बसन्त भासत भरम से, वास्तव में कछु नांहि ।१।
जगत ब्रह्म में है नहीं, है तो मिथ्या जान ।
मिथ्या जग है ब्रह्ममय, बसन्त निश्चय मान ।२।
यद्यपि नैन से दीखता, होत सकल व्यवहार ।
बसन्त तो भी स्वप्न वत्, मिथ्या है संसार ।३।
मिथ्या रज्जु में सर्प जिम, रजत सीप में जान ।
बसन्त तैसे ब्रह्म में, मिथ्या जग पहिचान ।४।
रज्जु में भासत तिमर कर, माला तरु जड़ सांप ।
बसन्त देखहुं दीप ले, केवल रज्जु है आप ।५।
जैसे रज्जू में भासते, सर्प लकीर दरार ।

तैसे भासत भरम कर, आतम में संसार ।६।

भासत सिप में दूर से, भोडर कागज रूप ।
बसन्त नेड़े जाय जब, दीसत सीप स्वरूप ।७।

जैसे भासत सीप में, अभ्रक कागज रूप ।
तैसे भासत ब्रह्म में, बसन्त जगत अनूप ।८।

मायामय सब जगत यह, मिथ्या है सत् नाहिं ।
मिथ्या है अधिष्ठानमय, कहा वेद के माहिं ।९।

बसन्त जैसे ठूंठ में, भासत भूत अरु चोर ।
भासत तिम जग ब्रह्म में, तांपीछे मत दौड़ ।१०।

अधिष्ठान इस जगत का, बसन्त ब्रह्म पछान ।
तांते यह जग ब्रह्म है, घट माटी जिम जान ।

जो कछु है सो ब्रह्म है, ब्रह्म भिन्न नहिं कोय ।
कर्त्ता कर्म क्रिया सबी, बसन्त ब्रह्ममय जोय ।

जल के तरंग लहर ज्यों, बसन्त जलमय आहिं ।
ब्रह्म रचित यह जगत त्यों, ब्रह्म अहे भिन्न नाहिं ।

बसन्त चेतन से भया, उत्पन्न यह आकाश ।
नभ से वायु होय पुनि, तासें अग प्रकाश ।१४।
तोय अग्नि से होय है, तासें भूमि अपार ।
इन पांचों से होत हैं, बसन्त यह संसार ।१५।
बसन्त जो जिससे भये, सो तिस माँहि लय होय ।
कार्य कारण रूप इस, जानत ज्ञानी सोय ।१६।
बसन्त कार्य जगत है, कारण ब्रह्म पछान ।
कारण कार्य होत है, कार्य कारण महान ।१७।
कार्य कारण एक है, सूत वस्त्र ज्यों जान ।
त्यों जग आतम एक है, बसन्त निश्चय मान ।१८।
ओऽम् से अक्षर भये, अक्षर ओऽम् आकार ।
बसन्त ब्रह्म से जगत है, जगत ब्रह्म निर्धार ।१९।
एक बीज से पेड़ जिम, होवत बहु प्रकार ।
बसन्त भये तिम ब्रह्म से, नाना यह संसार ।२०।
कञ्चन से कुण्डल भये, कुण्डल कञ्चन रूप ।

बसन्त निश्चय जान तिम, जग चेतन स्वरूप ॥
ज्ञान दृष्टि से जगत यह, भासत ब्रह्म स्वरूप ।
भूषण कञ्चन दृष्टि से, भासत कञ्चन रूप ।२२
जगत ब्रह्म दो नाम है, वस्तु एक ही जान ।
बसन्त ज्ञानी कहत इक, जानत भेद अजान ।२३।
बसन्त अपने आप से, सृष्टि रची करतार ।
तांते यह जग ब्रह्म है, यामें फेर न फार ।२४।
बसन्त भासत भरम से, जगत ब्रह्म के मांहि ।
विवेक से इक ब्रह्म है, जग कछु भासत नांहि ॥
आतम ब्रह्म और जगत को, जो जानत इक रूप ।
बसन्त सो नर मुक्त है, फिर न पड़त भवकूप ।२६
अद्वितीय पूरण ब्रह्म है, ना है दूसर कोय ।
बसन्त भासत और जो, जान ब्रह्म है सोय ।२७।
अद्वितीय आतम ब्रह्म को, बसन्त जानत जोय ।
काहूं से सो डरत नहिं, निर्भय रहता सोय ।२८।

अनुभव विचार

जगत ब्रह्म का रूप है, ब्रह्म आतम स्वरूप ।
बसन्त मैं हूं आतमा, जग है मेरा रूप ।१।
बसन्त मुझ से जगत यह, उपजत स्थित होय ।
मुझ में फिर लय होत है, मुझसे भिन्न नहिं कोय ।।
सब मेरे मैं सर्व का, बसन्त भेद कछु नाहिं ।
मैं हूं व्यापक सर्व में, सब हैं मुझहीं माहिं ।३।
बसन्त मेरा देश है, सारा यह संसार ।
मैं हूं सबका मित्र पुनि, मेरा सब परिवार ।४।
बसन्त मैं दो भांति की, कही ग्रन्थन माहिं ।
शुद्ध मैं आतम राम है, मलिन देहमय आहिं ।।
देह मलिन मैं हूं नहीं, मैं हूं शुद्ध स्वरूप ।
मलिन मैं दुःखमय सदा, शुद्ध मैं आनन्द रूप ।।
मलिन मैं को काट दे, शुद्ध मैं से तुम तात ।
लोहे को लोहा कटे, बसन्त यह बतलात ।७।

बसन्त मैं हूं आतमा, सत्चित् आनन्द रूप ।
आतम भिन्न जो देह है, मिथ्या जड़ दुःख रूप ।।
जैसे मकड़ी आप से, आप निकासत जाल ।
आपहिं तिसमें फसत है, खाकर होत निहाल ।।
तैसे चेतन आप से, आप रचत संसार ।
भोगी बनकर फसत है, निकसत कर वीचार ।।
पाञ्च अंश हैं जगत में, देखो कर वीचार ।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म है, नाम रूप संसार ।११
नाम रूप को त्याग के, अस्ति भाति प्रिय जान ।
बसन्त तांको आपना, निज स्वरूप पहिचान ।१२
आतम चिन्तन नित करो, जे चाहत सुख शांति ।
बसन्त इन बिन कर्म सब, है दुःख रूप भ्रांति ।१३
बसन्त अकेला बैठ के, तजे सर्व को तात ।
चिन्तन कर निज ब्रह्म का, बोल न दूजी बात ।१४
सब में सबसे असंग मैं, सब है मेरा रूप ।

बसन्त ऐसा निश्चय कर, होया अगम अनूप ।।
आपहिं बनयो आप मैं, देव दनुज नर नार ।
बसन्त मुझसे अलग नहिं, सारा यह संसार ।१६।
त्रिलोकी का नाथ मैं, त्रिलोकी मुझ माहिं ।
मुझसे और न अधिक को, मुझ सम कोई नाहिं ।।
एकपना है ईश में, नाना जीवों माहिं ।
जीव ईश से रहित मैं, मुझमें इक दो नाहिं ।१८
देश काल पुनि वस्तु का, छेदन नहिं मुझ माहिं ।
सर्व देश सब काल पुनि, मैं हूं सबके माहिं ।१९
बसन्त आतम ब्रह्म है, सब घट में भरपूर ।
ज्ञानहीन देखत नहीं, जानत है अति दूर ।२०।
बसन्त पूजे आतमा, पूज जात सब देश ।
सब देवन के पूजते, मिलत न आतम भेश ।२१।
सब देवन के पूजते, भेद भरम नहिं जात।
ब्रह्म आतम को जानते, द्वैत अज्ञान नशात ।२२

सत्चित् आनन्द आतमा, निर्गुण निरहंकार ।
बसन्त पिण्ढ ब्रह्मण्ड का, है सो इक आधार ॥
शंकर आतम देव है, पार्वती बुद्धि जान ।
बसन्त तन कैलाश है, ऐसा धर तू ध्यान ।२४।
आतम शिव को छोड़ कर, पूजत शिव लिंग जोय ।
बसन्त पावत मुक्ति नहिं, भटकत शिव गण होय ॥
बसन्त ज्योति सूर्य की, उदय अस्त ही होय ।
अखण्ड आतम ज्योति है, देखो मन में सोय ॥
दरसे आतम ज्योति के, मिट जा भेद अज्ञान ।
मिटत न ममता मोह मद, बसन्त देखे भान ॥
रामकृष्ण रवि शारदा, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
बसन्त आतम देव में, सबका है प्रवेश ।२८।
श्रुति सीता जान तुम, बसन्त आतम राम ।
देही अयोध्या नगरी, जान करो विश्राम ।२९।
राधा रानी वृत्ति यह, कृष्ण आतम देव ।

बसन्त वृन्दावन बदन, निशदिन तांको सेव ।३०
प्रत्यक्ष आतम देव को, अल्प मती कर त्याग ।
देखन चाहत परोक्ष को, मन में धर अनुराग ।३१
आतम के सब नाम हैं, ओऽहं सोऽहं आदि ।
बसन्त अपना नाम जप, लाइ सहज समाधि ।३२
ओऽम् सोऽहं नाम मम, मैं हूं चिद् स्वरूप ।
बसन्त अपना आप लखि, भा चेतन का रूप ।३३
बसन्त सारी विश्व का, मैं हूं जाननहार ।
मुझको कोई न जानता, सारा यह संसार ।३४
जड़ी भूत यह जगत है, मैं हूं चेतन देव ।
टेऊंराम गुरु ने कहा, बसन्त पाया भेव ।३५।
बसन्त चिन्तन जगत का, देत क्लेश अपार ।
तांते तांको त्याग के, करलो तत्त्व विचार ।३६।
बसन्त चिन्तन ब्रह्म का, शान्ती देत महान ।
तांते निशदिन तुम करो, छोड़ देह अभिमान ।३७

ज्ञानी और अज्ञानी

ज्ञानी जानत ब्रह्म को, बसन्त अपना आप ।
मान अज्ञानी भेद को, भोगत अति सन्ताप ।१।
ज्ञानी देखत ब्रह्म को, सुनत ब्रह्म की बात ।
बोलत बानी ब्रह्म को, बसन्त दिन औ रात ।२
ज्ञानी सुख में रहत नित, जीवन मुक्ति पाय ।
बसन्त अज्ञ दुःख पाय हैं, जग बन्धन मन लाय ।३
ज्ञानी जैसा जगत में, ऊंचा और न जान ।
बसन्त अज्ञ सम नीच नहिं, कहते वेद पुरान ।४।
ज्ञानी निज आनन्द महिं, रहत सदा लव लीन ।
विषयानन्द को भोग अज्ञ, बसन्त होवत दीन ।५
आत्म ज्ञानी जगत में, रहत सदा निर्लेप ।
बसन्त जैसे ताल में, रहता कमल अलेप ।६।
आत्म ज्ञानी मनुष्य है, प्रत्यक्ष आतम देव ।
बसन्त तांको सेव कर, पावो आतम भेव ।७।

आतम ज्ञानी कहत जो, सो निश्चय हो जात ।
बसन्त सेवत तांहि जो, सो सब ही फल पात ।९
आतम ज्ञानी पुरुष का, करले निशदिन संग ।
तांके संगति से चढ़े, बसन्त आतम रंग ।८।
आतम ज्ञानी पुरुष को, तन मन दक्षिणा देह ।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, ज्ञान वचन सुन लेह ।१०।

मिश्रित उपदेश

बेद करत उपदेश अस, तजि निन्द्रा उठ जाग ।
बसन्त गुरु से ज्ञान ले, आतम में कर राग ।१।
ब्रह्मातम को जान इक, हरिये भेद भ्रान्ति ।
अहं ब्रह्म को धार उर, बसन्त कर चित्त शांति ।२
धर्म अर्थ पुनि काम त्रय, चोथा मोक्ष पहिचान ।
चार पदार्थ कहत यह, बसन्त वेद पुरान ।३।
बसन्त सम्पति विपति में, सन्त रहत इक रूप ।
उदय अस्त में सूर्य जिम, होवत रक्त स्वरूप ।४।

कारण से जो क्रोध हो, ताहि तजे सुख होय ।
बसन्त बिन कारण करे, शान्ति न हो कब सोय ।।
काम क्रोध लब मोह मद, मतसर मान गुमान ।
बसन्त ये रिपु जीत के, पाओ शान्ति महान ।६।
बसन्त जिस नर की बुद्धि, विषयासक्त न होत ।
तामें सद्गुण ज्ञान निज, शीघ्र होत उद्योत ।७।
विषयासक्ति को त्याग कर, हरि सुमरत जो नीत ।
मात पयोधर सो नहीं, बसन्त कबहुं पीत ।८।
सब जीवन के हेत जो, देत प्रान धन दान ।
बसन्त सो पुण्यात्मा, भोगत भोग महान ।९।
अपने सुख के हेत जो, दूःख और को देत ।
बसन्त ऐसा नीच नर, वास नरक में लेत ।१०।
करत निन्दा जो सन्त की, तांकी सा फिर होय ।
बसन्त फेंके धूड़ नभ, फिर मुख पड़ती सोय ।११
औरहिं को निन्दा करे, सन्त दुःखी हो जात ।

बसन्त मूर्ख कर निन्दा, मन में बहु हर्षात ।१२।
वृद्धों का सन्मान कर, होत सुखी हैं संत ।
बसन्त उनको देह दुःख, हर्षंत मूर्ख जन्त ।१३।
गुरुमुख सनमुख होत है, मनमुख बेमुख होय ।
गुरुमुख पाए परमगति, मनमुख नरके रोय ।१४
गुरुमुख गुरु आज्ञा चले, मनमुख मन के भाय ।
गुरुमुख पाते परम सुख, मनमुख मन घबराय ।१५।
अपने ही मन्द भाव से, दीसत पर के दोष ।
मन्द भाव तज आपना, बसन्त हो निर्दोष ।१६
माया मेरी मात है, परमेश्वर है तात ।
बसन्त भ्राता सन्त जन, रक्षा करत दिन रात ।१७
बसन्त मेरा कछु नहिं, जो कछु है सो तोर ।
तेरा तुझको दे दिया, छूटा बन्धन मोर ।१८।
पुस्तक में विद्या रहे, पर कर हो निज दाम ।
बसन्त कार्य करन में, आय न दोनो काम ।१६।

परम पिता गुरुदेव मम, ब्रह्म विद्या है मात ।
क्षमा दया मम बहिन हैं, देवी गुन है भ्रात ।२०
ब्रह्म बुद्धि है तीय मम, ज्ञान ध्यान हैं पूत ।
बसन्त तन का नाम है, मैं चेतन अवधूत ।२१।
सहज समाधि सेज मम, भोजन ब्रह्मानन्द ।
आसन निश्चल चीत है, रहनी हैं निर्द्वन्द ।२२।
राम बसे साकेत में, विष्णु वैकुण्ठ वास ।
कृष्ण बसे गो लोक में, बसन्त ब्रह्म निवास ।२३
वैकुण्ठ आदि लोक सब, मायामय पहिचान ।
माया काया से परे, मम, वपु आतम जान ।२४।
माया मय सब लोक हैं, माया मय सब देव ।
माया भिन्न निज रूप मम, सतगुरु दीना भेव ।।
तन को आतम जानना, बन्धन सो पहिचान ।
आतम वपु निज जानना, बसन्त मुक्ति सो मान ।।
बसन्त जिम आकाश का, घट से नाहिं सम्बन्ध ।

तैसे आतम देह में, रहत सदा स्वछन्द ।2७।
जड़ चेतनमय जगत यह, मन का जान विलास ।
बसंत जब मन अमन हो, तब मिट जाय जगभास ।।
आशा जिसके मन बसे, सो है सबका दास ।
आश तजे हरि को भजे, दास बने जग तास ।2६।

"आशीर्वाद"

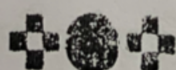
कुशल करे श्री कृष्ण तब, ब्रह्मा दे परिवार ।
नारायण नित सुमति दे, लक्ष्मी भरे भण्डार ।।1।।

दुर्गा दुश्मन क्षय करे, शंकर देवे शान्ति ।
विघ्न हरे सब विघ्नहर, सूर्य दे यश कान्ति ।।2।।

राम सदा रखवार हो, सतगुरु दे निज ज्ञान ।
बसन्त ये दश देवता, तेरा करे कल्यान ।।3।।

श्री बसन्त विज्ञान माला समाप्त

ओ3म् शान्तिः । शान्तिः ।। शान्तिः ।।।



"सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की आरती"

ॐ जय गुरु टेऊंराम, स्वामी जय गुरु टेऊंराम ।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम ।।ॐ।।
जब जब प्रेमिन निज हित कारण, तुम को पुकारा ।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सब को निस्तारा ।।1।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम ।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।।2।।
देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश ।
आतम रूप लखाया सबको, हरिया ताप क्लेश ।।3।।
पूर्ण अचल समाधि तेरी, सिद्ध आसन भ्राजे ।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे ।।4।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती ।
परम उदारी धैर्य धारी, परम अगाधमती ।।5।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साध सुजान ।
धन वह देश जहां तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान ।।6।।
सुरनर मुनिजन हरिजन गुनीजन, गावन गुन तुम्हरे ।

अन्त न पाय सके नर कोई, महिमा परम परे ॥7॥
जो जन तेरी आरती गावे, पावे सो मुक्ति।
साध संगत को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ति ॥8॥

छन्द :-सर्व स्वरूपं आदि अनूपं भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं काढ़त कूपं धर ध्याना॥
रहसस्य रामं दायक धामं, नित निष्कामं निर्वानी।
पाद नमामं निशदिन शामं श्री टेकंरामं गुरु ज्ञानी ॥1॥
चांवल चन्दन कुंगू केसर, फूलों की बरखा बरखाओ।
नृसिंह गोमुख भेरी बाजा, तबला सुरदा झांझ बजाओ॥
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरती साज करो बहु सुन्दर, सत्गुरु की जयकार बुलाओ॥
प्रार्थना- आशवन्दी गुरु तो दर आयी, तुझ बिन ठौर न कोई।
तुम हरि दाता तुम हरि माता, मेरी आश पुजाई॥
पाय पल्लव में पेरे प्यारी, आयी हेत संभाई।
तन मन धन अरदास करे मैं, मांगत नाम सनेही॥
नाम तुम्हारा साबुन कर मैं, धोसा पाप सभेई।
कहे टेकं गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाई॥

ॐ श्री सतनाम साक्षी

सतगुरु स्वामी बसन्तराम जी महाराज की आरती

ॐ जय गुरु बसन्तराम स्वामी जय गुरु बसन्तराम ।
सच्चितआनन्द रूप तुम्हारा, तुम हो सुन्दर श्याम ।।ॐ।।

1. निर्गुण से तुम सर्गुण बनकर, धर आये अवतार । स्वामी ।
कर्म उपासना ज्ञान सिखाकर, सबका किया उधार ।।ॐ।।

2. राम नाम का स्मरण करके, किया प्रभु से प्यार । स्वामी ।
वैरागी बन शुक ज्यों तूने, त्याग दिया घर बार ।।ॐ।।

3. पूर्ण सत्गुरु तुझको मिलिया, स्वामी टेऊंराम । स्वामी ।
गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर, पाया आनन्द धाम ।।ॐ।।

4. ज्ञान विज्ञान का सत्गुरु तुमने खूब किया प्रचार । स्वामी ।
ब्रह्म विद्या का दे उपदेशा, दूर किया अंधकार ।।ॐ।।

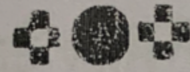
5. सहनशीलता क्षमा शान्ति, समता उर में धार । स्वामी ।
निष्कामी बन सेवा कीनी, सब जीवों की सार ।।ॐ।।

6. मोहिनी मूरत सुन्दर सूरत, प्रेमरत्न की खान । स्वामी ।
प्रेम का प्याला सबको पिलाकर, मस्त किया मस्तान ।।ॐ।।

7. शरण में तेरे जो जन आये, तजि मन का अभिमान । स्वामी ।
दीन दुखियों के दुखड़े हरके, सबका किया कल्याण ।।ॐ।।

8. भाव भक्त विश्वास से निशदिन, आरती जो गावे । स्वामी ।
पाप ताप संताप मिटाकर, ब्रह्मानन्द पावे ।।ॐ।।

। श्री स्वामी टेऊंरामजी की महिमा के श्लोक ।



निःशोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेवकन्द्यम् ।
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकाम, श्री टेऊंराम शरणं प्रपद्ये ॥1॥

शिष्टैश्च सर्वैं परिपूजिताय,: स्वर्गाधिपतयेऽपिनिःस्पृहाय ।
कामादिषड्वर्गजितांयतस्मै, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥2॥

योगीन्द्रवृन्दैः परिसेविताय, भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय ।
सर्वात्मभावे परिनिष्ठताय, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥3॥

पूर्णेन्दुशोभापरिपूरिताय, शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय ।
भस्मीकृताशेषनिबन्धनाय, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥4॥

भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय, प्रेमप्रकाशमण्डलोद्भवाय ।
आचार्यवर्याय वशेन्द्रियाय, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥5॥



"धुनि"

जय हो परम ब्रह्म अविनाशी. आतम, चेतन, आनन्द राशी ।
जय हो देवन के हरि देवा अखण्ड असंग अलख अभेवा ॥

जय हो सर्वज्ञ सबके स्वामी, व्यापक आतम अन्तर्यामी ।
जय हो भक्ति मुक्ति के दाता, दीन बन्धु हो भक्तन त्राता ॥

जय हो जग के उत्पन्नकर्त्ता, सुन्दर सगुन रूप को धरता ।
जय हो नर नारायण रूपा, गौरी शंकर सूर्य स्वरूपा ॥

जय हो भक्तन के हितकारी, नृसिंह नाम असुर संहारी ।
जय हो सीता राम खरारी, मोहन राधेश्याम मुरारी ॥

जय हो समर्थ संकट हारी, जहं तहं हमरी कर रखवारी ।
जय हो तांकी जो जय गावे; बसन्त सो सुख सम्पत्ति पावे ॥



प्रकाशक : स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री
मुद्रक : कौशल प्रिन्टिंग प्रेस, केसरगंज, अजमेर